पेज 8 से आगे

यानी बक्खर भी ज्यादा गहरा नहीं जाना चाहिए। लेकिन अब स्थिति बदल गई। सिंचाई आने के बाद ट्रेक्टर से जुताई होने लगी। कल्टीवेटर आ गए। ग्राम सेवा समिति के अध्ययन के अनुसार सिंचाई होने से रासायनिक खाद डालकर ज्यादा उत्पादन लेने की एक होड़ सी लग गई। इस कारण पुरानी पड़त भूमि समाप्त होने लगी। पशुओं की संख्या कम हो गई और कृषि क्षेत्र का रकबा बढ़ता चला गया। सिंचाई आने से फायदे तो हुए लेकिन इसके नुकसान भी कुछ कम नहीं है। ज्यादा सिंचाई से होशंगाबाद जिले की काली चिकनी मिट्टी वाली जमीन जो भरपूर उपजाऊ थी, आज दलदल में तब्दील होती जा रही है या जमीन में लवणीयता और क्षारीयता बढ़ती जा रही है।

विख्यात गांधीवादी बनवारीलाल चौधरी और उनकी संस्था ग्राम सेवा समिति ने 70 के दषक के उत्तरार्ध में इस इलाकें में मिट्टी बचाओ आंदोलन चलाया था। इस मुहिम पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र भी जुड़े थे। आज इसकी अगली कड़ी में समिति के द्वारा सुरेश दीवान के नेतृत्व में जैविक खेती की मुहिम चलाई जा रही है जिससे रूपसिंह जैसे कई किसान जुड़े हुए हैं।

यानी अब हमें मिट्टी के संरक्षण और संवर्धन पर जोर देना चाहिए। हमें जमीन को बिना रासायनिक खादो के परंपरागत तरीकों से उर्वर बनाने की ओर आगे बढ़ना चाहिए। गोबर खाद, हरी खाद, कम्पोस्ट खाद, केंचुआ खाद, जीवामृत आदि से जमीन को उपजाऊ बनाया जा सकता है। कई स्थानों पर ऐसे प्रयोग किए जा रहे हैं। इन सबसे जैव पदार्थ और सूक्ष्म जीवाणु मिट्टी को जीवित बनाए रखने के लिए जरूरी है।

केंचुआ भूमि को भुरभुरा, पोला और हवादार बनाने में लगा रहता है। वह जमीन की एक सतह से दूसरी सतह में घूमता है जिससे जमीन हवादार बनती है। वह सदाबहार हलवाहा है। यानी वह बखरनी कर देता है। ऐसी जमीन में ही पौधों को हवा-पानी मिलता है जिससे

धरती का क्यों नहीं रखा ख्याल ?

उनमें बढ़वार होती है। इसी प्रकार किसान अन्य उपाय भी करते आ रहे हैं। इनमें से एक अगर खेत में ढलान है तो उसके विपरीत जुताई करते है जिससे मिट्टी पानी में न बहे। इसी प्रकार पेड़ की टहनियां या लकड़ी की मोटी लकड़ियां नदी-नालों में बिछा देते है जिससे मिट्टी रूक जाती है और पानी बहकर निकल जाता है। इसके अलावा, बिना जुताई की खेती, वृक्ष खेती, भूमि को ढंककर रखना, मेड़ बनाना, हरी खाद लगाना, भूमि पर फैलनी वाली फसलें लगाना आदि भी मिट्टी संरक्षण के उपाय हैं।

यानी हमें टिकाऊ खेती की ओर बढ़ना होगा। पर्यावरण और मिट्टी-पानी का संरक्षण करना होगा। मेढबंदी व भू तथा जल संरक्षण के उपाय करने होंगे। हमारी खेती में पशुओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। पशु ऊर्जा और गोबर खाद का महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं। इसी विविधीकरण कीं टिकाऊ खेती में अपार संभावनाएं हैं। पारंपरिक हल-बक्खर की खेती में टिकाऊपन तथा पारिस्थितिकीय संतुलन की क्षमता है। अगर हम इस ओर आगे बढ़े तो हमारे निराश किसानों को उम्मीद की किरण दिखाई देगी।

(इंक्लूसिव मीडिया फैलोशिप 2011-12 के अध्ययन का हिस्सा)

महिलाओं की तस्करी का केंद्र बना कोलकाता

इनमें से तीन-उत्तर व दक्षिण 24-परगना और मुर्शिदाबाद बांग्लादेश की सीमा से सटे हैं। राज्य की लगभग एक हजार किमी लंबी सीमा बांग्लादेश से सटी है। इसके जरिए गरीबी की मारी बांग्लादेशी महिलाओं को कोलकाता

26 Feb 2012, Daily Chhattisgarh, Raipur